>

Title: Issue regarding naming Superbug after New Delhi.

डॉ. ज्योति मिर्धा (नागौर): अध्यक्ष महोदया, मैं इस सदन का ध्यान कुछ दिन पहले न्यूज़ पेपर्स में छपी एक हैडलाइंस की तरफ दिलाना चाहती हूं, जिसमें लेनसिट मैंगजीन के बारे लिखा था कि न्यू डेली सूपरबग। न्यू डेली सूपरबग एक बीटालैक्टमेज बैक्टीरिया है, जो काफी एंटीबॉयटिक्स को रेसिस्टेंट होता है। इसलिए उसे सूपरबग कहते हैं। अगर मैं यह कहूं कि मुझे इस बात से टीस नहीं पहुंची, तो यह कहना गलत होगा। इस देश में कई लोगों के रिएक्शन्स आये थे। आईसीएमआर ने उसके बारे में बहुत स्ट्रंग रिएक्शन दिया था कि अगर एक रेसिस्टेंट बैक्टीरिया दिल्ली में मिलता है, तो आप उसका नाम शहर के नाम पर क्यों रखते हैं? एक और वीकली न्यूज़ मैंगजीन ने उस पर आर्टिकल दिया था कि हमें इसमें बुरा नहीं मानना चाहिए, क्योंकि ऐसा पहले भी हुआ है, ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि अगर कोई रेसिस्टेंट बैक्टीरिया मिला हो, तो उसका नाम उस शहर पर रखा गया हो। बीटालैक्टमेज की जो सेम क्लास है, उसी बैक्टीरिया के लिए उन्होंने उसका एक एग्जैम्पल कोट किया था। उन्होंने कहा था कि वेरोना, इटली में कोई बैक्टीरिया मिला था, उसका नाम वीआईएन-वन रखा गया था, साउपाउलो, मैक्सिको में कोई बैक्टीरिया मिला था, उसका नाम भी उस पर रखा गया था। यह बात ठीक है। मेरा यह कहना है कि जो सबसे प्रिवलेंट स्ट्रेन है, इस पर्टिकुलर बीटालैक्टमेज बैक्टीरियम के लिए बहुत टेक्नीकल क्लासीफिकेशन होती हैं, जो एक एम्ब्लर क्लासीफिकेशन होती हैं। दूसरी आपकी जैकोबी-मिडिरस क्लासीफिकेशन होती है। एक ज्यादा कॉमन लेंग्वेज मे काम में लेते हैं, उसे हम एक्सटैंडेड स्पैक्ट्रम बीटालैक्टमेज कहते हैं। उस तरीके से हम क्लासीफाई न करके शहरों के नाम पर अगर हम बैक्टीरिया का नाम देते हैं, अगर हम सैंसीटिविटी नहीं रखकर नॉमेनक्लेचर देते हैं, तो सबसे बड़ा एग्जैम्पल आता है। जो सबसे प्रिवलेंट बीटालैक्टमेज का स्ट्रेन है, वह 1996 में नार्थ केरोलिना में मिला था। उसका नाम क्लैबसिला निमोनी बीटालैक्टमेज रखा गया था। मैं पूछना चाहती हूं कि अगर आप यूनीफार्म सिस्टम रखना चाहते हैं, तो उसका नाम आपने नार्थ केरोलिना बीटालैक्टमेज क्यों नहीं रखा? एक इंटरनैशनल कोड फालो होता है, इंटरनैशनल कोड ऑफ नॉमेनक्लेचर ऑफ प्रोकैरिओट्स के हिसाब से नॉमेनक्लेचर होना जरूरी है। आईसीएमआर की इस बात से मैं सहमत हूं कि नॉमेनक्लेचर में सैंसीटिविटी रखनी जरूरी है। इसके अलावा यहां पर एक बात और चली थी कि लेनसिट मैंगजीन ने इसलिए यह स्टडी कंडक्ट की है, ताकि हिन्दुस्तान के अंदर जो बढ़ता हुआ मेडिकल टूरिज्म है, उसे कर्टेल किया जा सके। यह भी एक व्यू प्वाइंट सामने आया था। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब आप अपनी बात समाप्त कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. ज्योति मिर्धा : इससे मैं पार्टली एग्री कर पाऊंगी, क्योंकि लेनसिट जहां से आती है, अगर आप वहां देखें तो ब्रिटेन के अंदर नैशनल हैल्थ सर्विस होती है जो कैशलैस ट्रंजैक्शन है। अगर पैशेंट जाता है तो पैसा नहीं देता, डाक्टर वहां जाने वाले पैशेंट से पैसे नहीं लेते। अगर डाक्टर को 15 की जगह 10 ही पैशेंट देखने पड़े, तो वह ज्यादा खुश होगा कि मुझे कम पैशेंट देखने पड़ रहे हैं, मेरा काम कम है। लेकिन इससे जो प्रोडक्टिव चीज निकलकर सामने आती है, जो हमें पोजीटिवली देखनी चाहिए, वह यह है कि हमारे देश के अंदर चाहे कितनी ही एडवांस एंटीबॉयटिक्स हो, वह ओवर दी काउंटर मिलती है। अगर मैं कलैबुलेनिक एसिड लाना चाहूं, कार्बापेनम लेना चाहूं या सेफोलोस्पोरिन लेना चाहूं, तो उसे कोई भी आदमी जाकर ले सकता है। वह उसका आधा कोर्स लेता है, तो ठीक हो जाता है। उसकी वजह से बैक्टीरियम के लिए जो रेसिस्टैंट होती है, वह बढ़ती जाती है। मेरा यह निवेदन है कि हैल्थ मिनिस्टर ने भी एक बयान जारी किया था। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब आप समाप्त कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. ज्योति मिर्धा : मैं दो मिनट में अपनी बात समाप्त कर रही हूं। उन्होंने एक स्टेटमैंट जारी किया था और कहा था कि हम इस बात को ज्यादा क्रैडिबल नहीं मानते, क्योंकि इस स्टडी को एक इंटरनैशनल फार्मास्यूटिकल कम्पनी ने फंड किया था।

मेरा एक सवाल और है कि आज की तारीख में देश में साढ़े तेरह सौ के करीब ऐसी स्टडीज हैं, एमएनसीज जो ट्रायल कंडक्ट करा रही हैं, उनकी क्रेडिबिलिटी के बारे में क्या इश्यू है?

मैं चाहूंगी कि हाइएस्ट अथारिटी से हमारा विरोध दर्ज किया जाए, उनको कहा जाए कि जो इस बारे में सेंसिटिविटी रखें कि अगर किसी भी सुपरबग को नाम दें, तो उसको यूनिवर्सल रखते हुए, उसके हिसाब से नाम दें।

DR. PRABHA KISHOR TAVIAD (DAHOD): Madam, I would like to associate with the issue raised by Dr. Jyoti Mirdha.

श्री श्रीपाद येसो नाईक : महोदया, गोवा के एक अति महत्व के विषय को आपके सामने रखने का मौका ले रहा हूं। गोवा में दो नदियां हैं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप लोग बैठ जाइए, जरा सा धैर्य रखिए।